साहित्य में शिव का ज्योतिषीय महत्त्व

*डॉ. राजेश कुमार

साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत एवं महत्त्वपूर्ण है। अनेकों शाखाओं और प्रशाखाओं में विभक्त ज्योतिष उपासना में बहुत गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य सदैव अपने द्वारा किए गए पाप और दुष्कर्मों से ही कष्टमय जीवन व्यतीत करता है। उसकी निवृत्ति के लिए उपासना आदि सत्कर्म ही एकमात्र उपाय हैं, इसलिए पुराणों में उल्लेख है कि बुद्धिमान मनुष्य अपकर्म तज कर सदैव देवोपासना में लीन रहता है।

ज्योतिष शास्त्र को काल विधायक या काल निर्णायक शास्त्र भी कहा जाता है। यद्यपि काल ज्ञान के न्य उपाय भी हैं, किन्तु प्रत्यक्ष शास्त्र होने के कारण ज्योतिष ही सर्वमान प्रमाणिक शास्त्र है। ज्योतिष में भी स्वपन, शकुन, प्रश्न, दशा–महादशा आदि के माध्यम से समय का परिज्ञान किया जाता है। सूर्य चन्द्रादि ग्रहों तथा नक्षत्रों की समस्त गणना एवं योग से भूत–भविष्य तथा वर्तमान तीनों समयों की बातों की जानकारी होती है। ज्योतिष शास्त्र में जातक की जन्म कुण्डली के अनुसार मिलने वाले सुख–दुःखों की फल प्राप्ति में काल निर्णय का बड़ा महत्त्व है, जिन्हें ग्रहों की दशा, अन्तर्दशाओं तथा गोचर आदि के माध्यम से जाना जाता है। अन्तर्दशादि–भेदों से युक्त सभी दशाएँ प्राणियों के शुभाशुभ–मिश्रित फल को ही प्रदर्शित करती है। इसी कारण ज्योतिष शास्त्र में महादशा और अन्तरदशा का महत्त्व है।

'बृहत्पारावार होरा शास्त्र' नामक ग्रन्थ में प्रायः चालीस प्रकार की दशाओं की चर्चा है, किन्तु व्यवहार में विशोतरी, अष्टोतरी तथा योगिनी दशा का विशेष चलन है। ज्योतिषी स्थान अथवा विश्वास के भेद से इन दशाओं को स्वीकार करते हैं। फिर भी कलयुग में विशोतरी दशा की प्रधानता स्वीकार की गई है। इन महादशाओं में अन्तर्दशाएँ, प्रत्यन्तर्दशाएँ तथा सूक्ष्म, प्राण आदि अनेक दशाएँ अर्न्तयुक्त होती हैं। जिनका फलित ग्रन्थ में बहुत विस्तार से विचार हुआ है। यहाँ केवल इतना ज्ञात करना है कि कौनसी दशा–अन्तर्दशा में अनिष्ट कारक योग होने पर भगवान् शिव की उपासना करनी चाहिए –

1.सूर्य की महादशा में – सूर्य यदि अनिष्कारी हो तो या अन्तर अथवा प्रत्यन्तर्दशा में सूर्य का अनिष्टकारी रूप हो तो उस दोष के निवारण के लिए मृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए। इससे समस्त दोष समाप्त हो जाते हैं, तथा भगवान शिव एवं सूर्य का अनुग्रह प्राप्त होता है

तद्दोपरिहारार्थ मृत्युंजय जपं चरेत।
सूर्य प्रीतिकरीं शान्ति कुर्यादरोग्य आदि शेत।।

इसी तरह सूर्य की महादशा में शनि एवं केतुकी अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय मंत्र की एक माला रोज करने से अका मृत्यु या मृत्युकारक कष्ट का निवारण होता है।

2. चन्द्रमा की महादशा में यदि गुरु का अन्तर हो तो अनिष्टकारक व अकाल मृत्यु योग बनता है। अतः इस दोष की निवृत्ति के लिए 'शिव सहस्रनाम' का जाप करना चाहिए। शनि की अन्तर्दशा होने पर भी शरीर कष्ट निवारण हेतु महामृत्युंजय का जाप करना चाहिए।

चन्द्रमा में केतू की अन्तर्दशा में भय होता है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिए मृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए। – मृत्युंजय प्रकृर्वीत सर्वसम्पत्प्रादायनम्। इसी प्रकार चन्द्र में शुक्र की अन्तर्दशा में तथा सूर्य की

अन्तर्दशा में क्रमशः रुद्र जाप तथा शिव पूजन अवश्य करना चाहिए।

3. मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में रुद्र–जाप तथा वृषभदान को महत्त्व दिया जाता हे। राहू की अन्तर्दशा होने पर भी नाग का दान, महामृत्युंजय मंत्र का जाप, ब्राह्मण भोज आदि करना चाहिए। मंगल में गुरु की खराब दशा होने पर शिव सहस्रनामावली क जाप करना चाहिए। इसी तरह शनि की अन्तर्दशा में हनुमान जी पर चोला चढ़ाएँ तथा मृत्युंजय के पाठ करें।

4. राहु की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा दोष कारक होने पर अकाल मृत्यु की सम्भावना रहती है, इसलिए विश्व पूजन व स्वर्ण प्रतिमा का दान करना चाहिए।

5. गुरु की महादशा में अनिष्टकारक गुरु होने पर शिव सहस्रनाम का जाप व गोदान करने से सुख शान्ति प्राप्त होती है। इसी प्रकार राहू की अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय के जप का विधान है।

6. शनि की महादशा में शनि तथा राहु की खराब अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए। इसी प्रकार गुरु की अनिष्टकारक अन्तर्दशा होने पर शिव सहस्रनाम क जाप तथा स्वर्ण दान का विशेष महत्त्व है। इससे आरोग्य तथा सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

7. बुध की महादशा में मंगल, गुरु व शनि की अन्तर्दशा यदि ठीक नहीं हो तो वृषभ दान और मृत्युंजय मंत्र का जाप तथा शिव सहस्रनाम का पाठ करने से अनिष्ट रूपी योग टल जाता है।

8. केतु की महादशा सात वर्ष की होती है। इसमें केतु में केतु तथा गुरु की अन्तर्दशा दोष कर होने पर स्वास्थ्य खराब रहता है। खर्च बढ़ जाता है। आत्मीय जन से वियोग होता है। इसमें महामृत्युंजय का पाठ तथा शिवजी का सहस्रवर करना चाहिए।

9. शुक्र की महादशा में दोष युक्त राहु, गुरु तथा केतु की अन्तर्दशा में मृत्युंजय मंत्र का जाप श्रेष्ठ फलदायक होता है। तथा सहपाठ भी लाभ देता है।

इस तरह यह स्पष्ट होता है कि भगवान की शरण में जाने से जातक भय, दोष, रोग, क्लेश से मुक्त होता है तथा सम्पन्न एवं सुखी जीवन व्यतीत करता है।

***सह–आचार्य**
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, उनियारा (टोंक)

संदर्भ सूची

1. दान बहादुर पाठक विनय पत्रिका समीक्षा पृ. 171
2. डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र : तुलसी दर्शन पृ. 307
3. डॉ. माता प्रसाद गुप्त : तुलसीदास पृ. 378
4. कल्याण ,मानस अंक खण्ड 2 पृ. 977
5. दान बहादुर पाठक वि.प. समीक्षा पृ. 174
6. वि.प. पृ. 56
7. वि.प. पृ. 50